पाठ – 4

भारत के विदेश संबंध

20/10/2022

(1.) अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ :—

⇒ भारत को स्वतंत्रता कठोर एव चुनौतीपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों मे प्राप्त हुई थी।

⇒ उपनिवेशवाद की समाप्ति के बाद विश्व के मानचित्र पटल पर कुछ नए देशो का उदय हुआ था। नए देशों के सामने लोकतंत्र बनाये रखने की तथा अपनी जनता की भलाई करने की दोहरी चुनौती थी।

⇒ एक राष्ट्र के रूप में भारत का जन्म विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि मे हुआ था। ऐसे में भारत ने अपनी विदेश नीति में अन्य सभी देशों की संप्रभुता का सम्मान करने व शांति कायम करके अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य सामने रखा।

⇒ द्वितीय विश्व युद्ध के तुरन्त बाद के दौर में अनेक विकासशील देशों ने ताकतवर देशों की इच्छानुसार अपनी विदेश नीति बनायी क्योंकि उन्हें इन देशों से अनुदान या कर्ज मिल रहा था। इस कारण से दुनिया के विभिन्न देश दो गुटों में बँट गए एक गुट संयुक्त राज्य अमरीका और उसके समर्थक देशों का प्रभाव में रहा तो दूसरा गुट सोवियत संघ के प्रभाव में

(2.) गुटनिरपेक्षता की नीति :—

⇒ सम्पूर्ण विश्व में उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष चल रहे थे और भारत के राष्ट्रवादी नेता दुनिया के अन्य उपनिवेशों में मुक्ति संग्राम चला रहे नेताओं के संपर्क में थे, नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इंडियन नेशनल आर्मी

(आई एन.ए.) का गठन किया था।

(i) नेहरू की भूमिका :—

⇒ भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रीय एजेण्डा तय करने में निर्णायक भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के रूप में सन् 1948 से 1964 तक उन्होंने भारत की विदेश नीति की रचना और उसके क्रियान्वयन पर गहरा प्रभाव डाला।

⇒ नेहरू जी की विदेश नीति के तीन बड़े उद्देश्य थे — कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना, क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना तथा तीव्र गति से आर्थिक विकास करना। नेहरू इन उद्देश्यों को गुट निरपेक्षता की नीति अपनाकर प्राप्त करना चाहते थे।

(ii) दो खेमों से दूरी :—

⇒ भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधनों से अपने को दूर रखना चाहता था। सन् 1956 में जब ग्रेट ब्रिटेन ने स्वेज नहर के मामले को लेकर मिस्र पर आक्रमण किया तो भारत ने इस नव- औपनिवेशिक हमले के विरुद्ध विश्वव्यापी विरोध का नेतृत्व किया था।

(iii) एफ्रो -एशियाई एकता :—

⇒ नेहरू के दौर में भारत ने एशिया और अफ्रिका के नव - स्वतंत्र देशों के साथ संपर्क बनाए। सन् 1940 और 1950 के दशकों में नेहरूजी बड़े मुखर स्वर में एशियाई एकता का समर्थन करते रहे तथा भारत

ने नेहरू के नेतृत्व में मार्च 1947 में एशियाई सम्बन्धन सम्मेलन (एशियन रिलेशंस कांफ्रेस) का आयोजन किया।

⇒ भारत चाहता था कि इंडोनेशिया, डच औपनिवेशिक शासन से शीघ्र मुक्त हो जाए।

⇒ इंडोनेशिया के शहर बांडुंग में एफ्रो - एशियाई सम्मेलन सन् 1955 में हुआ।

⇒ बांडुंग सम्मेलन में ही गुट - निरपेक्षता की नींव पड़ी

⇒ गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रथम सम्मेलन सितम्बर 1961 में बेलग्रेड में सम्पन्न हुआ। गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थापना में नेहरूजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

(3.) चीन के साथ शांति और संघर्ष :—

⇒ पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्धों के विपरीत स्वतंत्र भारत ने चीन के साथ अपने रिश्तों की शुरूआत बड़े मित्रतापूर्ण ढंग से की।

⇒ सन 1949 ई. की चीनी क्रान्ति के पश्चात भारत, चीन की कम्युनिस्ट सरकार को मान्यता देने वाला प्रथम देश था।

⇒ शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पाँच सिद्धान्तों (पंचशील सिद्धान्त) की घोषणा भारत के प्रधानमन्त्री प. जवाहर लाल नेहरू व चीन के प्रमुख चाऊ एन लाई ने संयुक्त रूप से 29 अप्रैल, 1954 में की। दोनों देशों के बीच मजबूत सम्बन्धों की दिशा में यह एक अच्छा कदम था।

Page No.: PANKAJ
Date: / /

⇒ चीन ने सन् 1950 में तिब्बत पर कब्जा कर लिया। इससे भारत और चीन के बीच ऐतिहासिक रूप से जो एक मध्यवर्ती राज्य बना चला आ रहा था, वह समाप्त हो गया। तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा ने भारत से राजनीतिक शरण माँगी और सन् 1959 में भारत ने उन्हें शरण दे दी।

⇒ सन् 1962 में चीन ने सीमा विवाद को लेकर भारत पर अचानक हमला कर दिया और नेफा व लद्दाख में एक बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।

⇒ भारत-चीन युद्ध से भारतीय राष्ट्रीय स्वाभिमान को चोट पहुँची लेकिन इसके साथ-साथ राष्ट्रीय भावना भी बलवती हुई कुछ सैन्य कमांडरो ने या तो इस्तीफा दे दिया या अवकाश ग्रहण कर लिया। रक्षामंत्री वी. के. कृष्णमेनन को भी मंत्रिमंडल छोड़ना पड़ा।

⇒ सोवियत संघ का पक्षधर गुट भाकपा में ही रहा और उसने कांग्रेस से नजदीकियाँ बढ़ाई।

⇒ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सन् 1964 में टूट गई। इसी में से मार्क्सवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाई।

⇒ भारत - चीन युद्ध के बाद नागालैण्ड को राज्य का दर्जा दिया गया। मणिपुर और त्रिपुरा यद्यपि केन्द्र शासित प्रदेश थे लेकिन उन्हें अपनी विधानसभा के निर्वाचन का अधिकार प्राप्त हुआ।